जगजननी जय! जय!!

जगजननी जय! जय!!
जगजननी जय! जय!!
म ाँ जगजननी जय! जय!!
भयह रिणि, भवत रिणि,
म ाँभवभ ममनन जय! जय ॥

जगजननी जय जय..॥

तू ही सत-चित-सुखमय,
शुद्ध ब्रह्मरूपा ।
सत्य सनातन सुन्दर,
पर-शशव सुर-भूपा ॥

जगजननी जय जय..॥

आदि अन दि अन मय,
अववचल अववन शी ।
अमल अनन्त अगोचि,
अज आनाँि शी ॥

जगजननी जय जय..॥

अववकारी, अघहारी,
अकल, कलाधारी ।
कर्त्ा ववचध, भर्त्ा हरर,
हर सँहारकारी ॥

जगजननी जय जय..॥

तू ववधिवू, िम ,
तू उम , मह म य ।
मूल प्रकृनत ववद्य तू,
तू जननी, ज य ॥

जगजननी जय जय..॥

राम, कृष्ण तू, सीता,
व्रजरानी राधा ।
तू वांछाकल्पद्रुम,

हाररणण सब बाधा ॥

जगजननी जय जय..॥

ि श ववद्य , नव ि ुग ा,
न न शस्त्रकि ।
अष्टम तृक , योधगनन,
नव नव रूप ि ि ॥

जगजननी जय जय..॥

तू परधामननवाशसनन,
महाववलाशसनन तू ।
तू ही श्मशानववहाररणण,
ताण्डवलाशसनन तू ॥

जगजननी जय जय..॥

सुि-मुनन-मोदहनन सौम्य ,
तू शोभ ऽऽि ि ।
ववसन ववकट-सरुप ,
प्रलयमयी ि ि ॥

जगजननी जय जय..॥

तू ही स्नेह-सुधामनय,
तू अनत गरलमना ।
रत् नववभूवित तू ही,
तू ही अस्स्ि-तना ॥

जगजननी जय जय..॥

मूल ि िननव मसनन,
इह-पि-मसद्धिप्रि ।
क ल तीत क ली,
कमल तू वि े॥

जगजननी जय जय..॥

शस्तत शस्ततधर तू ही,
ननत्य अभेदमयी ।
भेदप्रदशशानन वाणी,

ववमले! वेदत्रयी ॥

जगजननी जय जय..॥

हम अनत िीन िुखी म ाँ!,
ववपत-ज ल घेिे ।
हैं कपूत अनत कपटी,
पि ब लक तेिे ॥

जगजननी जय जय..॥

ननज स्वभाववश जननी!,
दयादृस्ष्ि कीजै ।
करुणा कर करुणामनय!
िरण-शरण दीजै ॥

जगजननी जय जय..॥

जगजननी जय! जय!!
माँ! जगजननी जय! जय!!
भयहाररणण, भवताररणण,
माँ भवभाशमनन जय! जय ॥

जगजननी जय जय..॥

AartiPooja.com